Page No.
Date :

पाठसहगामी क्रियाएं :—

शिक्षा का उद्देश्य अधिगमकर्ताओं का सर्वांगीण विकास है, किन्तु अध्ययन - अध्यापन में ज्ञानात्मक पक्ष मुखर एवं क्रियात्मक पक्ष गौण रहा है और सभी पक्षों में एकरूपता लाने हेतु पाठसहगामी क्रियाओं को सम्मिलित किया जाता है, पाठसहगामी क्रियाएं पाठ के साथ चलने वाली क्रियाएं हैं, शिक्षण में नवीनता, व्यापकता तथा रोचकता लाने हेतु भी पाठसहगामी क्रियाओं की महत्वपूर्ण भूमिका है,

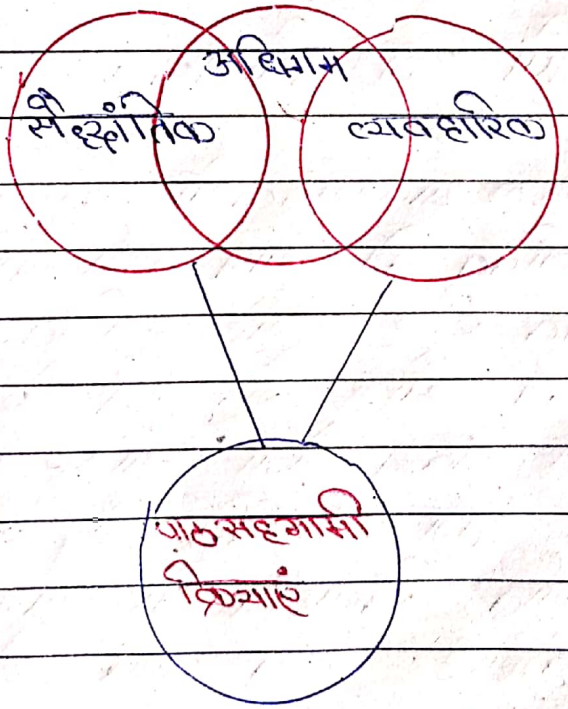

Scanned with CamScanner

पहले पाठ्यक्रम के साथ की गतिविधियों को पाठ्येतर गतिविधियों के रूप में जाना जाता था किन्तु अब शैक्षिक परिवेश की सम्पूर्ण गतिविधियों को पाठसहगामी गतिविधि के रूप में सम्मिलित किया जाता है। इसके द्वारा विद्यार्थी व्यवहारिक ज्ञान से परिचित होते हैं, कक्षा शिक्षण और प्रशिक्षण को सक्षम सशक्त करने में भी इसकी सराहनीय भूमिका होती है। बौद्धिक व्यक्तित्व के लिए कक्षा शिक्षण आवश्यक है जबकि चरित्र निर्माण, नैतिक एवं आध्यात्मिक आदि के विकास में यह पाठ्यक्रम गतिविधियां का होना आवश्यक है, यह विद्यार्थियों के बीच समन्वय, समायोजन एवं भावना प्रवाह आदि विकसित करने के लिए मदद करता है।

क्रियाकलापों का प्रयोजन :—

(क) सामाजिक आवश्यकताओं की पूर्ति - यह सभी क्रियाएं व्यक्ति को साथ कार्य करना सिखाती है। एक व्यक्ति और दूसरे व्यक्ति के बीच में, एक व्यक्ति और समुदाय के मध्य में किस प्रकार का संबंध होना चाहिए विद्यार्थी इन क्रियाओं द्वारा सीखते हैं। समाज के लघु रूप अर्थात विद्यालय में सामाजिकरण में भी यह क्रियाएं विशेष रूप से अपनी भूमिका निभाती है।

(ख) मनोवैज्ञानिक आवश्यकताओं की पूर्ति :—

Scanned with CamScanner

सहगामी क्रियाओं द्वारा विद्यार्थियों की मनोवैज्ञानिक आवश्यकताओं की पूर्ति की जाती है, उदाहरणस्वरूप:- किशोरावस्था के बालकों में समूह प्रेमता की प्रवृति पाई जाती है विद्यालय के अधिकारी चाहे या न चाहे वहां भिन्न-भिन्न समूह बनते रहेंगे। सहगामी क्रियाओं द्वारा हम इस प्रवृति का उन्नयन कर सकते हैं।

(ग) नैतिक आवश्यकताओं की पूर्ति :—
इन क्रियाओं द्वारा विद्यार्थी में सच्चाई, न्यायप्रियता तथा ईमानदारी जैसे गुणों का विकास कर सकते हैं। एक छटाँक नैतिक अनुभव एक सेर नैतिक प्रशिक्षण से बढ़कर है" उचित सही मायनों में चरितार्थ होती है।

(घ) रुचियों का विकास :—
पाठशालाओं में आयोजित की जाने वाली सहगामी क्रियाओं से इस बात का पता चल जाता है कि बालकों की रुचियाँ क्या-क्या हैं, वे अपनी रुचि से कार्यों में भाग लेकर, अपनी रुचियों को विकसित कर सकते हैं।

(ङ) अवकाश के समय का सदुपयोग :—
विद्यार्थी जिन सहयोगी क्रियाओं में भाग लेते हैं, आगे जाकर भावी जीवन में अवकाश के समय उनका प्रयोग भली-भाँति कर सकते हैं, इससे उनके व्यक्तित्व का विकास सभी दिशाओं में होता है।

Scanned with CamScanner